# अनुसंधान दर्शिका प्रथम भाग
## खण्ड – क
## एम.डी. आयुर्वेद शोध प्रबन्ध सारांश
## अनुक्रमणिका

## 6 – मौलिक सिद्धान्त


| क्र. सं. | शीर्षक का नाम | : | अध्येता का नाम | पृष्ठ नं. |
|---|---|---|---|---|
| | **1983** | | | |
| 1. | अर्श अतिसार ग्रहणी का–प्रायः परस्पर हेतुत्व एवं तद्गत अग्निमांद्य का चिकित्सात्मक अध्ययन | : | डा. आनन्द कुमार शुक्ला | 1 |
| | **1984** | | | |
| 2. | ह्रास हेतुर्विशेषश्च–सिद्धान्त का प्रामाणिक अध्ययन | : | डा.योगेश्वर दयाल बंसल | 2 |
| 3. | अपतर्पणोत्थ व्याधि में सन्तर्पण (सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन) | : | डा.योगेन्द्र कुमार | 3 |
| | **1985** | | | |
| 4. | धातवो हि धात्वाहाराः (च.सू. 28/3) | : | डा. बृजनन्दन गौतम | 4 |
| 5. | आयुर्वेदीय त्रिदोष सिद्धान्तान्तर्गत श्लेष्म विवेचन | : | डा. राजेश कुमार शर्मा | 4 |
| 6. | ''न च सर्वाणि शरीराणि व्याधि क्षमत्वे समर्थानि भवन्ति''(च.सू. 28/7) के परिप्रेक्ष्य में व्याधि क्षमत्व का आयुर्वेदीय विश्लेषण | : | डा. कमलेश कुमार शर्मा | 5 |
| 7. | अग्नि विवेचन | : | डा. गोविन्दराम पयासी | 6 |

**1986**


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 8. | दोषों का धातु एवं मलों के साथ आश्रयाश्रयी भाव (सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन) | : | डा. गणेश पाण्डेय | 7 |
| 9. | देहस्य रूधिरं मूलम्–एक प्रायोगिक अध्ययन | : | डा. सत्यपाल शर्मा | 8 |
| 10. | शरीर का समयोगवाहित्व एक विवेचन | : | डा. विजय कुमार पारीक | 9 |


**1987**


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 11. | मानव प्रकृति परीक्षणात्मक अध्ययन (वातलाद्याः सदातुरा के परिप्रेक्ष्य में) | : | डा. विजय शंकर पाण्डे | 9 |
| 12. | त्रिदोष एवं नाड़ी विज्ञान (सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन) | : | डा. नरेश कुमार शर्मा | 10 |


**1988**


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 13. | अरिष्ट विज्ञानीयम् (ग्रहणी रोग के परिप्रेक्ष्य में) | : | डा. संतोष शर्मा | 11 |
| 14. | ''रोगाः सर्वेऽपि मन्देऽग्नौ'' उदर रोग के परिप्रेक्ष्य में अग्निवृद्धिकर भावों का तुलनात्मक अध्ययन | : | डा. केदार लाल मीणा | 11 |
| 15. | संतर्पणोत्थ व्याधियों में अपतर्पण का सैद्धान्तिक विवेचन | : | डा. रूक्मिणी गुप्ता | 12 |

**1989**


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 16. | आमो विषमचिकित्स्यानाम् | : | डा. रतन कुमार पारीक | 13 |


**1990**


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 17. | ''क्षीणेषु दोषेष्वनिलात्मकः स्यात्'' के सन्दर्भ में प्रमेह रोग में ''सवृंहणं तत्र कृशस्य कार्यम्'' का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन | : | डा. मनोज कुमार शर्मा | 13 |
| 18. | उपप्लुता योनिव्यापद् में पलाशादि कल्क प्रयोग द्वारा ''सपिच्छिला परिक्लिन्ना स्तम्भनः कल्क इष्यते'' सिद्धान्त की पुष्टि | : | डा. सीमा जैन | 14 |

# अनुसंधान दर्शिका द्वितीय भाग

## खण्ड – क

## एम.डी. आयुर्वेद शोध प्रबन्ध सारांश

## अनुक्रमणिका

### 6 – मौलिक सिद्धान्त


| क्र. सं. | शीर्षक का नाम | | अध्येता का नाम | पृ.सं. |
|---|---|---|---|---|
| | **1992** | | | |
| 1. | ''समानगुणाभ्यासो हि धातूनां वृद्धिकारणम्'' आयुर्वेदीय मौलिक सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में कार्श्य रोग में वृंहणीय महाकषाय का प्रायोगिक अध्ययन | : | डा. शंकर लाल शर्मा | 1 |
| 2. | विचर्चिका व्याधि की सैद्धान्तिक अवधारणा एवं उसका विनिश्चितीकरण | : | डा. भैरोसिंह मीणा | 2 |
| 3. | ''प्राकृतः सुखसाध्यस्तु वसन्त शरदुद्भवः'' प्राकृत ज्वर सिद्धान्त पुष्ट्यर्थ ''लङ्घनं स्वेदनं कालः'' इस चिकित्सा सिद्धान्त का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन | : | डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा | 3 |
| | **1994** | | | |
| 4. | वातोदर में अग्नि विकृति विनिश्चय तथा रसोन तैल प्रायोगिक अध्ययन | : | डा. महेश कुमार गुप्ता | 5 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 5. | आयुर्वेद में मानस प्रकृति की अवधारणा का समीक्षात्मक अध्ययन सात्विक प्रकृति के संबंध में | : | डा. महेश कुमार शर्मा | 6 |

**1995**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 6. | आमातिसार (Amoebiasis) में ''पाचनं संग्रहणं देयम्'' (च.चि. 19/15 चक्रपाणि) सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में धान्यपंचक क्वाथ का विश्लेषणात्मक अध्ययन | : | डा. लुट्टन लाल अहिरवाल | 7 |
| 7. | ''निदानदोषदूष्यविशेषेभ्यो विकारविघातभावाभाव प्रतिविशेषा भवन्ति'' के परिप्रेक्ष्य में अवसाद रोग का अध्ययन | : | डा. नित्यानन्द शर्मा | 8 |

**1996**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 8. | A Comparative study of the efficacies of Basti Karma and Agni Karma on Gridhrasi (Sciatica) with special reference to "Pratyekam Sthanadusyadi kriya vaisesyamacharet" | : | Dr. S.R. Santosh | 9 |

**1997**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 9. | ''तस्माच्चिकित्सार्धमिति ब्रुवन्ति सर्वा चिकित्सामपि बस्तिमेके'' सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में रोग एवं दोषानुयायी बस्ति प्रयोग | : | डा. विष्णु प्रिया मिश्रा | 10 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 10. | ''रक्तजांस्तान् विभावयेत्'' सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में आमवात रोग पर रक्तशोधकावलेह का विश्लेषणपरक अध्ययन | : | डा. प्रेम दाधीच | 12 |
| 11. | अष्टांगसंग्रह एवं अष्टांगहृदय सूत्र स्थान का तुलनात्मक अध्ययन | : | डा. मदन मोहन पाराशर | 13 |
| | **1998** | | | |
| 12. | Aesthetic in Ayurveda and Personality damaging factors with special reference to Prabha to enrich the Principle | : | Dr. Trupti R. Singh | 14 |
| 13. | प्राचीन ग्रन्थों में उल्लिखित मन एवं मानसरोगों का विवेचनात्मक अध्ययन | : | डा. कमल चन्द शर्मा | 15 |
| 14. | हेतु व्याधिविपरीत सिद्धान्तानुरूप मधुमेह रोग पर मधुमेहारि चूर्ण का प्रायोगिक अध्ययन | : | डा. सविता | 16 |
| | **1999** | | | |
| 15. | ''यत्किंचित् कफवातघ्नं.....''(च.चि. 17/147) सिद्धान्त पुष्ट्यर्थ शट्यादि चूर्ण का अनूर्जताजन्य तमक श्वास के परिप्रेक्ष्य में सैद्धान्तिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन | : | डा. निशा गुप्ता | 17 |
| 16. | बहिः परिमार्जन क्रम में प्रदेह प्रयोग एक सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक विश्लेषण | : | डा. निशि चावला | 18 |

**2001**


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 17. | ''यथादोषं प्रकुर्वीत भैषज्यं पाण्डुरोगिणाम्'' च.चि. 16/123 सिद्धान्त पुष्ट्यर्थ कफज पाण्डुरोग के परिप्रेक्ष्य में नवीन कल्पनापरक गोमूत्र हरीतकी का चिकित्सात्मक अध्ययन | : | डा. रेखा दाधीच | 19 |
| 18. | ''स्रोतः सु च विशुद्धेषु चरत्यविहतोऽनिलः'' के परिप्रेक्ष्य में तमक श्वास में मनःशिलादि धूमपान का चिकित्सात्मक अध्ययन | : | डा. राजेन्द्र सिंह मीणा | 20 |
| 19. | ''समानगुणाभ्यासो हि धातूनां वृद्धिकारणम्'' सिद्धान्त पुष्ट्यर्थ अस्थिक्षयज विकारों में ''बस्तयः क्षीरसर्पीषि तिक्तकोपहितानि च'' सूत्र का समीक्षात्मक अध्ययन | : | डा. पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा | 22 |
| 20. | ''अपानेनावृते सर्वं दीपनं ग्राहि भेषजम्। वातानुलोमनं यच्चः ।।'' सिद्धान्त पुष्ट्यर्थ कफावृतापान (आमातिसार) में धान्यकादि क्वाथ का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक विवेचन | : | डा. महेन्द्र कुमार जैन | 24 |
| 21. | ''भेषजैः साध्ययाप्यांस्तु क्षिप्रं भिषगुपचारेत्'' (च.चि. 17/69) सिद्धान्त पुष्ट्यर्थ श्रृंग्यादि चूर्ण का तमक श्वास के परिप्रेक्ष्य में सैद्धान्तिक एवं चिकित्सात्मक अध्ययन | : | डा. विष्णु दत्त जोशी | 25 |

**2002**


| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 22. | ''तेषांक्षयवृद्धि शोणितनिमित्ते'' सिद्धान्त पुष्ट्यर्थ रसप्रदोषज विकार ''क्लैब्य'' के परिप्रेक्ष्य में बल्य महाकषाय प्रयोग– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन | : | डा. मदन लाल सैनी | 26 |
| 23. | ''श्लेष्मलाया कटुप्रायाः समूत्रा बस्तयो हिताः'' (च.चि. 30/85) सिद्धान्त पुष्ट्यर्थ श्लेष्मला योनि व्यापद् रोग परिप्रेक्ष्य में गोमूत्र युक्त त्रिफला क्वाथ की उत्तरबस्ति एवं उदुम्बरादि तैल पिचु धारण का चिकित्सात्मक अध्ययन | : | डा. निधि भट्ट | 27 |
| 24. | Learning Methodology in Ayurveda a critical review in context of Modern Era. | : | Dr. Asit Kumar Panja | 28 |
| 25. | Comparative study of Charak's Dietary principles with Modern Dietetics | : | Dr. Ajay Nawale | 29 |
| 26. | ''व्याधि प्रत्यनीक'' सिद्धान्तानुक्रम में सोरियासिस त्वक् रोग पर सोमराजी चूर्ण एवं सोमराजी तैल का सैद्धान्तिक एवं चिकित्सात्मक अध्ययन | : | डा. भंवर लाल जाटोलिया | 30 |
| 27. | ''क्रिया कफघ्नी कफमर्मरोगे'' (च.चि. 26/96) सिद्धान्त पुष्ट्यर्थ उदुम्बरादि लेह सगुग्गुलु का कफज हृद्रोग के परिप्रेक्ष्य में (धमनी–काठिन्य के सन्दर्भ में) सैद्धान्तिक एवं चिकित्सात्मक अध्ययन | : | डा. देवेन्द्र सिंह चाहर | 31 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 28. | चरकोक्त स्वस्थचतुष्क का समीक्षात्मक अध्ययन एवं युगानुरूप संदर्भ में अपेक्षायें | : | डा. विनोद कुमार लवानियां | 33 |

**2003**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 29. | ''विरुद्धं तच्च न हितं हृत्संपद्विधिभिश्च यत्'' सिद्धांत पुष्ट्यर्थ विरुद्ध द्रव्य का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन | : | डा. मनोहर राम | 34 |
| 30. | अनुसन्धानात्मक वैशिष्ट्य क्रम में मधुमेहारि चूर्ण का मधुमेह रोग में प्रभावात्मक अध्ययन | : | डा. शिव दयाल शर्मा | 35 |
| 31. | ''आमवाते पंचकोलसिद्धं पानान्नमिष्यते'' सिद्धान्त पुष्ट्यर्थ आमवात रोग में पंचकोलसिद्ध पानान्न के प्रभाव का अध्ययन | : | डा. मुरलीधर पालीवाल | 36 |
| 32. | ''सूत्रस्थाने तु वाग्भटः'' के परिप्रेक्ष्य में अष्टांगसंग्रह सूत्रस्थान का समीक्षात्मक अध्ययन | : | डा. उमाशंकर शर्मा | 37 |
| 33. | संहिताओं में गोरस वर्ग का स्वरूप एवं समन्वयात्मक विवेचन | : | डा. योगेश कुमार | 38 |

**2004**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 34. | Development of Ayurveda in India after independence - A critical study | : | Dr. Sur Shyam Singh | 39 |

35. चरकसंहिता में वर्णित मन एवं मनोवैज्ञानिक विषयों का विवेचनात्मक अध्ययन एवं मनोरोगों में उनकी उपादेयता : डा. राजेश उपाध्याय 40

36. चरकोक्त वादमार्गों का विश्लेषणात्मक अध्ययन : डा. विशाल कुमार शर्मा 41

**2005**

37. ''मेध्या विशेषेण च शङ्खपुष्पी'' (च.चि. 1/3/31) चरकोक्ति का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन : डा. कमलेश कुमार शर्मा 42

38. ''व्यङ्गः रक्तप्रदोषजः'' (च.सू. 28/12) संदर्भ पुष्ट्यर्थ रक्तचन्दनादि लेप का विश्लेषणात्मक अध्ययन : डा. प्रेम सिंह माली 43

39. ''स्वल्पं मुहुर्मूत्रयतीह वातात्'' (च.चि. 26/34) सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में मूत्रकृच्छ्र रोग में मूत्र विरेचनीय महाकषाय का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन : डा. लोकेश चन्द्र शर्मा 44

40. ''व्याधि प्रत्यनीक'' सिद्धान्तानुक्रम में न्यग्रोधादि चूर्ण का मधुमेह रोग पर सैद्धान्तिक एवं चिकित्सात्मक अध्ययन : डा. हंसराज शर्मा 46